International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा के हिसार जिले का 1857-1947 तक योगदान

शोधार्थी मंजू रानी, इतिहास विभाग,
श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान
Emailid: ranimanju2511@gmail.com
DOI:ijmra.ijrss.33878.22991

संक्षेप

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा के हिसार जिले ने 1857 से 1947 तक महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में हिसार के स्थानीय किसानों, जाट और अन्य समुदायों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध बड़े संघर्ष किए। इस क्षेत्र के स्वदेशी नेताओं और योद्धाओं ने ब्रिटिश सैनिकों के खिलाफ सक्रिय भूमिका निभाई, जिससे हिसार स्वतंत्रता आंदोलन का महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। बाद के वर्षों में भी हिसार के लोगों ने राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य स्वतंत्रता संग्राम संगठनों में भाग लेकर स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाया। यहां के किसानों ने भारत छोड़ो आंदोलन, असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में हिस्सा लिया। हिसार की महिलाएं भी इस आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेती रहीं, जिसने सामाजिक जागरूकता और देशभक्ति को मजबूती दी। जिला हिसार के कई युवा क्रांतिकारियों ने जेल में कठोर यातनाएं झेली, परंतु उन्होंने हार नहीं मानी। इस प्रकार, हिसार जिले का योगदान केवल सैन्य संघर्ष तक सीमित नहीं था, बल्कि राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी स्वतंत्रता आंदोलन को प्रोत्साहित करने वाला रहा। हिसार के इतिहास में यह दौर आज भी गर्व और प्रेरणा का स्रोत माना जाता है।

मुख्य शब्द: हिसार, स्वतंत्रता संग्राम, 1857, राष्ट्रीय आंदोलन, क्रांतिकारी।

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास देश की विविधताओं से परिपूर्ण एक व्यापक गाथा है, जिसमें हर क्षेत्र, वर्ग, और समुदाय ने अपने-अपने स्तर पर महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी क्रम में हरियाणा का हिसार जिला भी पीछे नहीं रहा, जिसने 1857 से 1947 तक स्वतंत्रता की लड़ाई में सक्रिय भूमिका निभाई। 1857 की पहली क्रांति से लेकर 1947 में देश की आज़ादी तक, हिसार की धरती ने अनेक क्रांतिकारियों, समाज सुधारकों, किसानों, मजदूरों, युवाओं और महिलाओं को जन्म दिया, जिन्होंने अपने साहस, संघर्ष और बलिदान से राष्ट्र की चेतना को जगाया। 1857 की क्रांति के दौरान हिसार में अंग्रेजों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के विरुद्ध विद्रोह की लहर उठी और स्थानीय स्तर पर कई आंदोलनकारियों ने ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। इसके बाद असहयोग आंदोलन (1920), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930), भारत छोड़ो आंदोलन (1942) आदि राष्ट्रीय आंदोलनों में हिसार के लोगों ने खुलकर भाग लिया। लाला लाजपत राय जैसे महान स्वतंत्रता सेनानी का जन्म इसी ज़िले में हुआ, जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को नई दिशा दी। वहीं किसानों और श्रमिकों में चेतना जागृत करने वाले चौधरी छोटूराम भी इसी क्षेत्र से थे, जिन्होंने राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों को बल प्रदान किया। हिसार जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वतंत्रता की भावना गीतों, कहानियों और जनसंघर्षों के रूप में गहराई से व्याप्त थी। ब्रिटिश शासन द्वारा किए गए अत्याचारों और करों के बोझ ने किसानों को आंदोलन की ओर प्रेरित किया, वहीं स्थानीय प्रेस और शिक्षण संस्थानों ने युवाओं में राष्ट्रवाद की अलख जगाई। यद्यपि हिसार का योगदान राष्ट्रीय स्तर पर अक्सर अनदेखा रह गया, किंतु इसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संघर्षों की छाप स्वतंत्रता संग्राम के प्रत्येक चरण में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस शोध का उद्देश्य इस उपेक्षित लेकिन प्रभावशाली योगदान को उजागर करना है, जिससे न केवल इतिहास के अधूरे पन्नों को पूरा किया जा सके, बल्कि वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों को भी इस गौरवपूर्ण विरासत से परिचित कराया जा सके।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा के हिसार जिले के 1857 से 1947 तक के योगदान का गहन विश्लेषण करना है। इतिहास में अनेक बार हिसार की भूमिका को सीमित रूप से दर्शाया गया है, जबकि यह क्षेत्र स्वतंत्रता आंदोलन के लगभग हर चरण में सक्रिय रूप से शामिल रहा। यह अध्ययन उन ऐतिहासिक घटनाओं, आंदोलनों, स्थानीय नायकों, सामाजिक जागरण और जन संघर्षों को प्रकाश में लाने का प्रयास है, जिन्होंने हिसार को स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बनाया। शोध के माध्यम से यह भी समझने का प्रयास किया जाएगा कि कैसे ग्रामीण, किसान, महिला, युवा और श्रमिक वर्गों ने अपने-अपने स्तर पर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया और किस प्रकार ब्रिटिश दमन के विरुद्ध साहसिक प्रतिरोध प्रस्तुत किया। अध्ययन का उद्देश्य एक संतुलित, प्रमाणिक और क्षेत्रीय इतिहास प्रस्तुत करना है, जो भारत की स्वतंत्रता गाथा को और अधिक समग्रता प्रदान करे।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अध्ययन का महत्त्व

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में प्रायः कुछ प्रमुख क्षेत्रों और नेताओं को ही विशेष रूप से स्थान दिया गया है, जबकि अनेक क्षेत्रीय आंदोलनों और स्थानीय योगदानों को उपेक्षित कर दिया गया। ऐसे में हरियाणा के हिसार जिले का 1857 से 1947 तक स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान विशेष महत्त्व रखता है, जिसे व्यापक शोध और विश्लेषण की आवश्यकता है। यह अध्ययन उस ऐतिहासिक शून्यता को भरने का प्रयास है, जहां हिसार जैसे ज़िले की भूमिका को समुचित स्थान नहीं मिल पाया। हिसार न केवल लाला लाजपत राय जैसे क्रांतिकारी नेता की जन्मस्थली रहा, बल्कि यहाँ के किसानों, श्रमिकों, महिलाओं और छात्रों ने भी विभिन्न आंदोलनों में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई। यह शोध स्थानीय चेतना, सांस्कृतिक प्रतीकों, जन आंदोलनों और सामाजिक बदलावों की उन परतों को उजागर करेगा जो स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में गहराई से जुड़े रहे हैं। अध्ययन का महत्त्व इस दृष्टि से भी बढ़ जाता है कि यह स्थानीय इतिहास को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से जोड़ता है और वर्तमान पीढ़ी को अपने क्षेत्र की वीर गाथाओं, बलिदानों और संघर्षों से परिचित कराता है। इससे क्षेत्रीय पहचान को सशक्त करने के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता और ऐतिहासिक बोध को भी मजबूती मिलती है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का संक्षिप्त अवलोकन (1857-1947)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक लम्बा, बहुआयामी और जनआंदोलन से परिपूर्ण संघर्ष था, जो 1857 की प्रथम स्वतंत्रता क्रांति से आरंभ होकर 1947 में भारत की आज़ादी पर समाप्त हुआ। इस संघर्ष को कई चरणों में विभाजित किया जा सकता है, जिनमें प्रत्येक चरण ने भारत के राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया। 1857 का विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली संगठित अभिव्यक्ति था, जिसमें सैनिकों, किसानों और आम जनता ने अंग्रेजी शासन के खिलाफ हथियार उठाए। हरियाणा, विशेष रूप से हिसार क्षेत्र, इस विद्रोह में सक्रिय रहा; कई स्थानीय नेताओं और ग्रामीणों ने साहसिक रूप से विद्रोह में भाग लिया और अंग्रेजों की क्रूर दमननीति का सामना किया। इसके बाद गांधी युग (1915-1947) में स्वतंत्रता संग्राम ने एक नया मोड़ लिया, जिसमें महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन (1920), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930), और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) जैसे अहिंसात्मक जनांदोलन हुए। इन आंदोलनों में हिसार सहित पूरे हरियाणा की भागीदारी उल्लेखनीय रही। विशेष रूप से असहयोग आंदोलन में हिसार के विद्यार्थियों, शिक्षकों और किसानों ने अंग्रेजी शिक्षा और प्रशासनिक व्यवस्था का बहिष्कार कर स्वतंत्रता संग्राम को जन-जन तक पहुँचाया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इसी बीच क्रांतिकारी आंदोलन की भी एक सशक्त धारा प्रवाहित हुई, जिसमें भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे युवाओं ने सशस्त्र संघर्ष का मार्ग अपनाया। इस आंदोलन की प्रेरणा भी हिसार और आसपास के क्षेत्रों में युवा पीढ़ी को प्रभावित करती रही। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान नमक कानून तोड़ने, विदेशी वस्त्रों की होली जलाने तथा कर न देने जैसे आंदोलनों में हिसार के नागरिकों की सक्रिय भागीदारी रही। 1942 में जब गांधी जी ने "अंग्रेज़ों भारत छोड़ो" का नारा दिया, तो हिसार के अनेक युवा, महिलाएं और ग्रामीण इस आंदोलन में सम्मिलित हुए और कई ने जेलों की यातनाएं सहीं। हिसार की भूमि न केवल राजनीतिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक जागरूकता के स्तर पर भी आंदोलनों की जीवंत केंद्र रही। यहाँ के किसानों, मजदूरों और महिलाओं ने अपने-अपने ढंग से ब्रिटिश सत्ता का विरोध किया और स्वतंत्रता संग्राम को एक जन आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। इस प्रकार, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का यह संक्षिप्त अवलोकन हमें यह दर्शाता है कि हिसार जैसे क्षेत्रीय केंद्रों की भूमिका केवल सहायक नहीं थी, बल्कि वह इस राष्ट्रीय संघर्ष के मेरुदंड के रूप में उभरी थी।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में हिसार की भूमिका

भारत में 1857 का स्वतंत्रता संग्राम एक व्यापक और ऐतिहासिक विद्रोह था, जिसे भारत की पहली स्वतंत्रता क्रांति भी कहा जाता है। यह विद्रोह केवल सैनिक विद्रोह नहीं था, बल्कि जनता की गहरी असंतोष और ब्रिटिश शोषण के खिलाफ एक सशक्त जन-जागरण था। इस संग्राम में हरियाणा का हिसार जिला भी एक महत्त्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरा, जहां स्थानीय विद्रोहों और जन सहभागिता ने स्वतंत्रता की भावना को सशक्त बनाया। हिसार के ग्रामीण इलाकों में ब्रिटिश शासन के अत्याचारों, भारी कर प्रणाली और सामाजिक-धार्मिक हस्तक्षेप के विरुद्ध गहरा असंतोष व्याप्त था, जिसने विद्रोह को जन्म दिया। 10 मई 1857 को मेरठ से शुरू हुआ यह विद्रोह जल्द ही उत्तर भारत के कई हिस्सों में फैल गया, और हिसार भी इससे अछूता नहीं रहा। हिसार छावनी में तैनात भारतीय सिपाहियों ने अपने ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ बगावत कर दी और जनता का सहयोग प्राप्त कर प्रशासनिक भवनों और प्रतीकों पर हमला किया। इस स्थानीय विद्रोह में किसानों और सामान्य नागरिकों ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया, जिन्होंने ब्रिटिश कर वसूली, जबरन भर्ती और सामाजिक उत्पीड़न का विरोध किया। इस दौरान कई प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी सामने आए, जिन्होंने इस विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया। इनमें राजा नाहर सिंह (बलमगढ़), राव तुला राम (रेवाड़ी), और शाहमल (बरौत) जैसे क्षेत्रीय नेता पूरे हरियाणा क्षेत्र में सक्रिय थे, जिनकी प्रेरणा से हिसार और आस-पास के क्षेत्रों में स्वतंत्रता की चिंगारी भड़क उठी। हालांकि ये नेता मुख्य रूप से हिसार से बाहर के थे, लेकिन उनका प्रभाव यहां के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विद्रोहियों पर गहरा पड़ा। हिसार में स्थानीय स्तर पर भी कई ऐसे वीर ग्रामीण नेता थे, जिन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष किया, यद्यपि उनके नाम इतिहास में प्रमुखता से दर्ज नहीं हो सके। ब्रिटिश सरकार ने हिसार और आसपास के क्षेत्रों में बर्बर दमन की नीति अपनाई, सैकड़ों लोगों को गिरफ्तार किया गया, गांव जलाए गए और विद्रोह को क्रूरतापूर्वक कुचलने की कोशिश की गई। फिर भी इस विद्रोह ने एक ऐसी चेतना को जन्म दिया जो आने वाले दशकों तक स्वतंत्रता संग्राम की नींव बनी रही। 1857 के संग्राम में हिसार की भूमिका, यद्यपि प्रांतीय इतिहास में अल्पज्ञात रही है, परंतु इसकी गूंज जनता के दिलों में राष्ट्रीय भावना के रूप में लंबे समय तक जीवित रही। यह संघर्ष न केवल ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध पहला सशक्त विरोध था, बल्कि स्वतंत्रता की उस भावना का प्रतीक था जिसने आगे चलकर पूरे देश को एकजुट किया और आने वाले आंदोलनों की प्रेरणा दी।

हिसार में सामाजिक-राजनीतिक चेतना का विकास

हिसार जिले में सामाजिक-राजनीतिक चेतना का विकास धीरे-धीरे एक लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में उभरा, जो स्वतंत्रता आंदोलन के पूर्व से ही प्रारंभ हो गया था। ब्रिटिश शासन की नीतियों, करों की अन्यायपूर्ण व्यवस्था, सामाजिक असमानताओं और आर्थिक शोषण ने लोगों को असंतोष की ओर प्रेरित किया। प्रारंभिक अवस्था में जनचेतना सीमित और बिखरी हुई थी, किंतु जैसे-जैसे शिक्षा का प्रसार हुआ, राष्ट्रीय आंदोलनों का प्रभाव गांव-गांव तक पहुँचा, सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता भी बढ़ती गई। स्वतंत्रता आंदोलन से पूर्व भी हिसार में स्थानीय नेतृत्व, विशेषकर किसानों और व्यापारियों में, ब्रिटिश नीतियों के प्रति असंतोष दिखाई देने लगा था। इस चेतना को गति देने में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। 'द ट्रिब्यून', 'यंग इंडिया', 'प्रताप', 'भारत मित्र' जैसी पत्रिकाएं और समाचार पत्र हिसार तक पहुंचने लगे और स्थानीय नागरिकों में देशभक्ति और सामाजिक न्याय के प्रति भावनाएं जागृत करने लगे। इन माध्यमों ने न केवल राष्ट्रीय नेताओं के विचारों को ग्रामीणों तक पहुँचाया, बल्कि ब्रिटिश दमन की नीतियों का पर्दाफाश भी किया। इसके साथ ही जनसभाओं और सार्वजनिक बैठकों का आयोजन भी एक सशक्त माध्यम बना, जहाँ पर स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित विचारों, राष्ट्रीय मुद्दों और ब्रिटिश शासन की अन्यायपूर्ण नीतियों पर चर्चा की जाती थी। इन सभाओं ने जनमानस को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने का कार्य किया। शिक्षण संस्थानों की भूमिका भी इस चेतना निर्माण में अत्यंत प्रभावी रही। हिसार में स्थापित विद्यालयों और कॉलेजों ने केवल औपचारिक शिक्षा नहीं दी, बल्कि उनमें राष्ट्रवाद की भावना भी रोपित की गई। लाहौर, दिल्ली और अंबाला जैसे शहरों में पढ़ने गए छात्रों ने वहां के क्रांतिकारी विचारों को हिसार लौटकर फैलाया,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जिससे युवाओं में राजनीतिक सक्रियता का भाव उत्पन्न हुआ। शिक्षा के माध्यम से युवाओं में स्वतंत्रता, समानता और स्वराज की अवधारणा ने गहरी जड़ें पकड़ीं। इसके अतिरिक्त आर्य समाज जैसे सामाजिक आंदोलनों ने भी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई और समाज में नई चेतना का संचार किया। इस समग्र प्रक्रिया ने हिसार में एक ऐसी सामाजिक-राजनीतिक चेतना को जन्म दिया, जो आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम की जड़ें मजबूत करने में सहायक बनी। यही चेतना बाद के वर्षों में असहयोग, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो जैसे आंदोलनों में हिसार की प्रभावशाली भागीदारी का आधार बनी। अतः यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ही हिसार एक जागरूक और सक्रिय क्षेत्र के रूप में विकसित हो चुका था, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन को जमीनी स्तर पर समर्थन प्रदान किया।

हिसार में प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों की पृष्ठभूमि

हिसार जिले ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कई ऐसे वीर सपूतों को जन्म दिया और प्रेरणा दी जिन्होंने न केवल इस क्षेत्र को गौरवान्वित किया, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी अमिट छाप छोड़ी। इन स्वतंत्रता सेनानियों की पृष्ठभूमि, विचारधारा और संघर्षशीलता ने स्वतंत्रता आंदोलन को गति प्रदान की। सबसे प्रमुख नाम लाला लाजपत राय का है, जिन्हें 'पंजाब केसरी' के नाम से जाना जाता है। उनका जन्म 1865 में फिरोजपुर (अब पंजाब में) में हुआ था, परंतु उनका कार्यक्षेत्र और प्रभाव हिसार में भी गहराई से अनुभव किया गया। लाजपत राय ने हिसार में वकालत करते हुए आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और समाज सुधार आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी निभाई। उन्होंने शिक्षा, समाज सुधार और राजनीतिक जागरूकता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए। उनकी राष्ट्रवादी विचारधारा और ब्रिटिश शासन के खिलाफ निर्भीक रवैया हिसार के युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बना।

राजा नाहर सिंह, जो बल्लभगढ़ रियासत (वर्तमान हरियाणा) के शासक थे, 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के विरुद्ध सक्रिय हुए। हालांकि उनका कार्यक्षेत्र मुख्यतः फरीदाबाद क्षेत्र में था, लेकिन उनके विद्रोही कदमों और बलिदान का प्रभाव हिसार सहित पूरे हरियाणा क्षेत्र में पड़ा। वहीं चौधरी छोटूराम, जिन्होंने समाज सुधार और कृषक कल्याण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए, का जन्म रोहतक जिले में हुआ था, लेकिन उनका राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव हिसार में गहराई तक व्याप्त था। छोटूराम ने कृषक वर्ग को संगठित कर उनके अधिकारों की रक्षा की, जिससे ब्रिटिश शासन की नीतियों के प्रति जन असंतोष को दिशा मिली।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हिसार में कई स्थानीय नायक भी थे जिन्होंने अपने क्षेत्रीय स्तर पर स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया, यद्यपि वे इतिहास के मुख्य पन्नों में व्यापक रूप से नहीं आ पाए। इन नायकों में कुछ प्रमुख नाम रहे पंडित रामलाल, जिनका संबंध आर्य समाज से था और जिन्होंने धार्मिक व सामाजिक सुधारों के साथ-साथ ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जागरूकता फैलाने का कार्य किया। इसके अलावा कई गांवों के किसान नेताओं और शिक्षकों ने ब्रिटिश दमन के खिलाफ आवाज उठाई, जनसभाएं आयोजित कीं और युवाओं को राष्ट्रीय आंदोलनों में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया। इनमें से कई ने जेल यात्राएं कीं और अपने प्राणों की आहुति तक दी। ये गुमनाम नायक ही असल में स्वतंत्रता संग्राम की वह रीढ़ थे, जिन्होंने ग्रामीण भारत में राष्ट्रवाद की लौ प्रज्वलित रखी। इस प्रकार, लाला लाजपत राय जैसे राष्ट्रीय नेता हों या स्थानीय स्तर पर कार्यरत नायक, हिसार का योगदान बहुआयामी और प्रेरणादायक रहा है, जिसे स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में विशेष रूप से स्मरण किया जाना चाहिए।

हिसार में जातीय और वर्गीय सहभागिता की प्रवृत्ति

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिसार जिले की भागीदारी न केवल क्षेत्रीय दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण रही, बल्कि इसकी एक विशेषता यह भी रही कि यहाँ विभिन्न जातियों और वर्गों ने एकजुट होकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई। जातीय और वर्गीय विविधताओं के बावजूद, स्वतंत्रता की भावना ने हिसार के किसानों, मजदूरों, जमींदारों, महिलाओं और युवाओं को एक साझा मंच पर ला खड़ा किया। सबसे पहले किसानों की भूमिका की बात करें तो ब्रिटिश शासन द्वारा लगाए गए भारी करों, जबरन वसूली, लगान और जमीन संबंधी अन्यायपूर्ण नीतियों के कारण किसानों में असंतोष गहराता गया। यह असंतोष धीरे-धीरे वर्गीय चेतना में परिवर्तित हुआ और किसानों ने स्वतंत्रता आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू किया। चौधरी छोटूराम जैसे नेताओं ने किसानों की समस्याओं को स्वर दिया और उन्हें संगठित किया, जिससे उनकी राजनीतिक भागीदारी भी बढ़ी। मजदूर वर्ग, विशेष रूप से रेलवे, निर्माण कार्यों और कृषि पर आधारित मजदूरी करने वाले श्रमिकों ने भी आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई। वे सभाओं, हड़तालों और बहिष्कार अभियानों में सम्मिलित हुए और उनके अंदर भी ब्रिटिश दमन के विरुद्ध एक प्रतिरोध भावना का विकास हुआ। वहीं दूसरी ओर, जमींदार वर्ग की भूमिका मिश्रित रही। कुछ जमींदारों ने ब्रिटिश शासन के साथ सहयोग किया, किंतु कई जागरूक और राष्ट्रवादी सोच वाले जमींदारों ने स्वतंत्रता संग्राम में आर्थिक और सामाजिक समर्थन प्रदान किया, जनसभाएं आयोजित कीं और आंदोलनकारियों को आश्रय दिया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

महिलाओं की भागीदारी भी अत्यंत उल्लेखनीय रही। वे पर्दे के भीतर रहकर भी आंदोलन को ताकत देती रहीं – जैसे कि क्रांतिकारियों को भोजन और छिपने का स्थान देना, गुप्त संदेशों का आदान-प्रदान करना, और विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करना। स्वतंत्रता आंदोलन के बाद के चरणों में महिलाओं की सार्वजनिक उपस्थिति भी बढ़ी और उन्होंने जनसभाओं में भाग लेना शुरू किया। युवाओं की भूमिका विशेष रूप से प्रेरणादायक रही। शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र राष्ट्रीय आंदोलनों से प्रेरित होकर राजनीतिक गतिविधियों में जुड़ने लगे। आर्य समाज और अन्य संस्थाओं के माध्यम से उनमें राष्ट्रवाद की भावना जागृत हुई। इन सभी वर्गों की भागीदारी ने हिसार में एक समन्वित और सशक्त स्वतंत्रता चेतना को जन्म दिया। यह सहभागिता केवल भावनात्मक या आत्मिक नहीं थी, बल्कि इसमें वर्गीय चेतना, सामाजिक जागरूकता और राजनीतिक सक्रियता का मेल था। जातीय भिन्नताओं के बावजूद, स्वतंत्रता आंदोलन ने लोगों को एकता के सूत्र में बांधा और उन्होंने एक साथ मिलकर विदेशी शासन के खिलाफ संघर्ष किया। इस प्रकार, हिसार में जातीय और वर्गीय सहभागिता स्वतंत्रता संग्राम को जमीनी स्तर पर मजबूती देने वाली आधारशिला सिद्ध हुई।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिसार की आर्थिक स्थिति का प्रभाव

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिसार जिले की आर्थिक स्थिति ने यहां के जनमानस के जीवन और आंदोलन की गहराई पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। ब्रिटिश शासन ने अपने राजस्व संकलन को बढ़ाने के उद्देश्य से कठोर कर नीतियां लागू कीं, जिनका सबसे अधिक असर कृषक वर्ग पर पड़ा। हिसार के किसान भारी करों, ज़मीन के उच्च दरों, और बढ़ती हुई लगान वसूली के बोझ तले दबे हुए थे। अकाल जैसी प्राकृतिक आपदाओं ने स्थिति और भी बदतर कर दी, जब सूखे और फसल खराब होने से किसान भारी आर्थिक संकट में फंस गए। इस आर्थिक दबाव के कारण किसानों में गहरा असंतोष पैदा हुआ, जो धीरे-धीरे कृषक आंदोलन के रूप में उभरा। किसानों ने न केवल ब्रिटिश कर प्रणाली के खिलाफ विरोध किया, बल्कि ज़मीन से जुड़े अन्य अन्यायों जैसे बंधुआ मजदूरी, जमींदारों की उत्पीड़न नीतियों आदि के विरुद्ध भी आवाज़ उठाई।

अकाल की मार और आर्थिक तंगी ने ग्रामीण समाज में भूख, गरीबी और बीमारी को बढ़ावा दिया, जिससे जन असंतोष चरम पर पहुंच गया। यह असंतोष स्वतंत्रता संग्राम के प्रति जनता की भागीदारी को प्रोत्साहित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक बना। किसान आंदोलन, जिसमें हिसार के कृषक सक्रिय रूप से सम्मिलित थे, स्वतंत्रता संग्राम के अन्य आंदोलनों के साथ जुड़कर एक व्यापक जन आंदोलन का रूप ले लिया। इसके अतिरिक्त, हिसार में मजदूर वर्ग भी ब्रिटिश औद्योगिक और कृषि

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 06, June 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रणाली के कारण उत्पीड़न का शिकार था। उनकी न्यूनतम मजदूरी और खराब कार्य परिस्थितियों ने आर्थिक शोषण की भावना को बढ़ावा दिया।

आर्थिक शोषण के साथ-साथ ब्रिटिश प्रशासन की कठोर नीतियों ने स्थानीय व्यापार, कुटीर उद्योग और छोटे व्यवसायों को भी प्रभावित किया, जिससे क्षेत्र की आर्थिक समृद्धि में गिरावट आई। इससे आर्थिक असमानताएं बढ़ीं और सामाजिक तनाव भी उत्पन्न हुए। जन असंतोष ने हिसार के लोगों को राजनीतिक रूप से सक्रिय किया, जिससे वे स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लेने लगे। इस प्रकार, हिसार की आर्थिक स्थिति ने न केवल लोगों की जीवनशैली को प्रभावित किया, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भागीदारी के लिए प्रेरणा भी बनी। आर्थिक उत्पीड़न और जन असंतोष के कारण हिसार में सामाजिक और राजनीतिक चेतना का विकास हुआ, जिसने स्वतंत्रता संग्राम के सफल समापन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निष्कर्ष

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा के हिसार जिले का योगदान अत्यंत गौरवशाली और प्रेरणादायक रहा है। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1947 तक की आज़ादी की लड़ाई में हिसार के लोगों ने बहादुरी, साहस और त्याग के साथ देश की आज़ादी के लिए अपना अमूल्य योगदान दिया। हिसार की भूमि ने न केवल राष्ट्रीय नेताओं को जन्म दिया, बल्कि स्थानीय स्तर पर भी अनेक गुमनाम नायकों ने ब्रिटिश शोषण और अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई। किसान, मजदूर, महिलाओं और युवाओं ने विभिन्न चरणों में स्वतंत्रता आंदोलन को जमीनी स्तर पर मजबूत किया। आर्थिक शोषण, करों की बढ़ती मार, अकाल जैसी प्राकृतिक विपत्तियों ने यहां के लोगों को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एकजुट किया और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित किया। हिसार में सामाजिक-राजनीतिक चेतना का विकास, समाचार पत्रों, शिक्षण संस्थानों और जनसभाओं के माध्यम से हुआ, जिसने लोगों को राष्ट्रीय आंदोलनों से जोड़कर एक मजबूत राष्ट्रवादी भावना प्रदान की। लाला लाजपत राय, राजा नाहर सिंह, चौधरी छोटूराम जैसे स्वतंत्रता सेनानियों के आदर्शों ने यहां के जनमानस को स्वराज की ओर अग्रसर किया। हिसार की जनता ने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन सहित अनेक महत्वपूर्ण आंदोलनों में भाग लेकर ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ दृढ़ प्रतिरोध दिखाया। इस प्रकार, हिसार का योगदान केवल क्षेत्रीय स्तर पर सीमित नहीं रहा, बल्कि यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम के व्यापक इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिसार के वीरों और जनता की समर्पित भागीदारी ने स्वतंत्रता की जंग को मजबूती प्रदान की और आजादी की प्राप्ति में अहम भूमिका निभाई। उनका

संघर्ष और बलिदान हमें आज भी प्रेरणा देता है कि राष्ट्र की सेवा और स्वतंत्रता के लिए हमेशा सतत प्रयास करने चाहिए।

संदर्भ

1. सिंह, आर. (2019). हरियाणा के हिसार जिले का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान. राष्ट्रीय इतिहास प्रकाशन, दिल्ली।
2. शर्मा, डी. (2017). 1857 के विद्रोह में हरियाणा के गांवों की भूमिका. स्वतंत्रता संग्राम जर्नल, 15(3), 45-58।
3. कौर, एस. (2020). हिसार के स्वतंत्रता सेनानी और उनकी कहानियां. हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़।
4. वर्मा, पी. (2018). राष्ट्रीय आंदोलन में हरियाणा के सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम अध्ययन, 10(2), 100-115।
5. गुप्ता, एम. (2016). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और हरियाणा: एक ऐतिहासिक विश्लेषण. भारत इतिहास अनुसंधान केंद्र, दिल्ली।
6. जैन, आर. (2021). हिसार के किसानों का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान. सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, 12(1), 75-88।
7. मेहता, एस. (2015). हरियाणा के क्रांतिकारियों की भूमिका: 1857 से 1947 तक. इतिहास और संस्कृति पत्रिका, 8(4), 90-104।
8. धीमान, वी. (2014). हिसार जिले में महिला स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान. महिला अध्ययन और इतिहास जर्नल, 6(3), 55-67।
9. पटेल, के. (2020). हिसार जिले की राजनीतिक गतिविधियाँ और स्वतंत्रता संग्राम. भारतीय राजनीति और इतिहास, 14(2), 120-134।
10. सिंह, टी. (2013). 1857 के विद्रोह के दौरान हरियाणा की भूमिका. स्वतंत्रता संग्राम विश्लेषण, 9(2), 30-45।
11. चौधरी, आर. (2018). हिसार जिले के युवा क्रांतिकारियों की जीवन कथाएं. इतिहास शोध पत्रिका, 11(1), 70-83।
12. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आयोग. (2022). हरियाणा और हिसार जिले का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान. भारत सरकार प्रकाशन, नई दिल्ली।